# कृष्ण की कहानियां

श्रीकृष्णदत्त भट्ट



बच्चों की कहानियां

हिन्दुस्तानी प्रचार सभा
बम्बई

हमारे देश की संस्कृति दुनिया में सबसे पुरानी और काफी समृद्ध है। मगर आपसी झगड़ों, जलन और बैर की वजह से हम कमजोर हो गये हैं और इसी वजह से डरी-सहमी हालत में जी रहे हैं। नये जमाने की शिक्षा भी हमें सुधार नहीं पाई है। इसीलिए इस कमजोर और खतरनाक हालत से हम उबर नहीं पा रहे हैं। फिर भी यह हकीकत है कि हमारी संस्कृति अत्यंत जीवंत है, कभी मिट नहीं सकती है।

दूसरे प्राणियों के मुकाबले आदमी में यह एक विशेषता है कि उसमें धर्म की सूझबूझ है। अच्छा-बुरा, धर्म-अधर्म परखने का उसे विवेक है। मैं तो इसे ही सच्चा धर्म मानता हूं। 'धर्म' वही है जिससे आदमी का सुखी, सार्थक जीवन बनता है। धार्मिक इन्सान समझता है कि दूसरों के सुख में उसका भी सुख है। दूसरों को तबाह करके कोई सुखी नहीं हो सकता। दूसरों के दुःख से जो सुख उठाता है, वह अधर्मी है।

सच्चाई और अहिंसा, धर्म पर चलने के दो रास्ते हैं। दुनिया के सभी धर्मों में इन दो बातों पर जोर दिया गया है। हिन्दू, इस्लाम, बौद्ध, ईसाई, पारसी, जैन, सिख आदि सभी धर्मों के पैगम्बरों ने धर्म के जिन आदर्शों की बात कही है, वह हर इन्सान के लिए समान रूप से लागू होती है। हमारे देश की परंपरा में सब धर्मों के लिए इज्जत की भावना रही है। हिन्दू धर्म का दायरा बहुत बड़ा और सबका भला चाहनेवाला रहा है। अफसोस है तो इस बात का कि हम लोगों में एक के बाद एक कमजोरियां आती गईं और एक उदार धर्म की अनमोल दौलत हम संभाल नहीं सके।

आज इस बात की जरूरत है कि दुनिया के विकसित धर्मों में हमारे लिए जो आवश्यक बातें कही गयी हैं उन्हें हम समझें और अपने जीवन में उन पर चलने की कोशिश करें।

नई पीढ़ी को सही समझ और शिक्षा देने के लिए ऐसे विचार उनके सामने रखना जरूरी है जिससे वे आदर्शों की तरफ प्रेरित हों और जिन्दगी का सही रास्ता उन्हें मिल सके।

हिन्दुस्तानी प्रचार सभा ने इसी उद्देश्य से दुनिया के मुख्य धर्मों में जो शिक्षाप्रद कहानियां हैं, बड़े-बड़े संत-पैगम्बरों की जिन्दगी में जो सच्ची घटनाएं हुई हैं, उन्हें लेकर एक सौ सचित्र पुस्तकें छापने की योजना बनाई है।

कहानियां इस तरह रखी गयी हैं कि बच्चों को वे उपदेश नहीं, जीवन से जुड़ी हुई मालूम हों और आसानी से समझ में आ जायें। मुझे उम्मीद है कि बच्चों के माता-पिता भी इन कहानियों को दिलचस्पी से पढ़ेंगे और अपने जीवन को समृद्ध करेंगे।

मुझे उम्मीद है कि इस कोशिश को पसन्द किया जायेगा, इस पर अमल किया जायेगा और इसका प्रचार किया जायेगा।

मोरारजी देसाई

अध्यक्ष,
**हिन्दुस्तानी प्रचार सभा**

# कृष्ण की कहानियां

श्रीकृष्णदत्त भट्ट

हिन्दुस्तानी प्रचार सभा
बम्बई

संपादक :
मूलशंकर भट्ट

चित्रकार :
ठाकोर राणा

प्रकाशक :
वाडीलाल डगली
मानद मंत्री
हिन्दुस्तानी प्रचार सभा
महात्मा गांधी मेमोरियल बिल्डिंग
७ – नेताजी सुभाष रोड
बंबई–४०० ००२

मुद्रक :
जितेन्द्रभाई ठाकोरभाई देसाई
नवजीवन मुद्रणालय
अहमदाबाद–३८० ०१४

मूल्य :
दो रुपये

# कृष्ण का बचपन

हम जिस देश में रहते हैं, उसका नाम है भारत। दिल्ली है हमारे देश की राजधानी। दिल्ली से थोड़ी दूर पर है मथुरा।

पुराने जमाने में मथुरा का अपना राज्य था और उसके राजा का नाम था उग्रसेन।

राजा के नाम में "उग्र" शब्द यानी बहुत गुस्सेवाला लगा तो था जरूर, लेकिन राजा थे बहुत सीधे, बड़े शान्त, बड़े उदार और बड़े धर्मात्मा।

उग्रसेन न किसी को सताते थे, न किसी पर जुल्म करते थे। अपनी प्रजा से बड़ा प्रेम करते थे।



देवक थे उग्रसेन के बड़े भाई। उन्हें कई बेटे-बेटियां थीं। सबसे छोटी बेटी का नाम था देवकी। बड़ी सीधी, बड़ी भोली!

उग्रसेन के अपने भी कई बेटे-बेटियां थीं। उनका सबसे बड़ा बेटा था कंस। खूब हट्टा-कट्टा, पहलवान और बड़े ही रूखे व घमंडी स्वभाव का। रहम नाम की चीज उसे छू नहीं गयी थी। जिसे चाहता मार-पीट देता। दूसरों को सताने मैं उसे जैसे मजा मिलता हो।

ऐसा आदमी ऊपर से वीर-बहादुर भले दिखे, भीतर से बड़ा डरपोक होता है। मन में पाप भरा रहने से उसे हरदम डर सताता रहता है।

यही हाल था कंस का।

अपनी बहनों में कंस सबसे ज्यादा प्यार करता था देवकी को। उसे वह अपनी बेटी जैसी मानता था।

देवकी की शादी के दूसरे दिन की बात है।

कंस अपनी बहन को उसकी ससुराल ले जाने के लिए अपने महल से बाहर निकला।

रथ अभी थोड़ी ही दूर चला था कि कंस को ऐसा लगा मानो आसमान से कोई बोल रहा है, "अरे मूर्ख कंस, तू जिस बहन को लिये जा रहा है, उसकी ही आठवीं संतान तेरा काल बनेगी।"

कंस ने चारों तरफ देखा। कहते हैं न, चोर की दाढ़ी में तिनका! कोई भी तो नहीं दीख पड़ा आसपास। पर आवाज साफ थी। तो क्या सचमुच देवकी का बेटा मेरा काल बनेगा?

कंस व्याकुल हो उठा।



जो पैदा होता है, वह मरता ही है एक दिन। फिर मौत से क्या डरना? लेकिन जो आदमी मूरख है, पापी है, बुरे काम करता है, वह मौत से बहुत डरता है। मौत के डर से वह बुरे से बुरा काम करते नहीं झिझकता।

आसमान से कोई बोला कि तेरा काल है देवकी की संतान और कंस आपे से बाहर हो गया। घोड़े की रास छोड़कर वह तुरंत जमीन पर कूद पड़ा और उसने खींच ली अपनी तलवार।

"इसका आठवां बच्चा मेरा काल है। मैं इसी को खत्म कर देता हूं, न रहेगा बांस न बजेगी बांसुरी।"

वसुदेव कंस को समझाते रहे, बार-बार समझाते रहे, पर कंस भला समझनेवाला था! वह तो क्रोध में अंधा हो रहा था। उसकी अक्ल पर पर्दा पड़ गया था।

कंस को गरजते देखकर आसपास के नागरिक भी रथ के पास आ पहुंचे। भोली-भाली देवकी को कंस के हाथ में फंसी देख वे चिल्लाने लगे, "छोड़ दो, देवकी को छोड़ दो युवराज!"

वसुदेव बोले, "तुम्हें देवकी से तो डर नहीं है राजकुमार?"

"नहीं, पर इसकी आगे पैदा होने-वाली संतान से तो है," कंस बोला।

"तो मैं वादा करता हूं कि जैसे ही देवकी को बच्चा होगा, उसे लाकर मैं तुम्हें सौंप दूंगा।" वसुदेव ने कहा।

"वादा करते हो ?"

"हां।"

"अच्छी बात है। वादाखिलाफी मत करना। याद रखना, मेरा नाम कंस है, कंस!"

कंस ने देवकी के बाल छोड़ दिए और लाल-लाल आंखें दिखाता चल पड़ा अपने महल की तरफ।

अबतक लोगों ने दौड़कर उग्रसेन को खबर कर दी थी कि कंस ने कैसा उत्पात मचा रखा है।

कंस को राजमहल के द्वार पर ही उग्रसेन मिले। कंस को देखते ही बोले, "अरे अभागे, तूने क्या किया यह! छोटी बहन पर हाथ छोड़ते तुझे लाज नहीं आयी ?"

बाप की ओर लाल आंखों से घूरते हुए कंस महल के भीतर चला गया। लेकिन उसने समझ लिया कि पिता उग्रसेन के राजा रहते हुए वह मनमानी नहीं कर सकेगा। समय पाकर उसने राजा उग्रसेन को गिरफ्तार कर लिया और खुद राजा बन बैठा।

राजा बनने के बाद ही उसने देवकी के बच्चों की जान लेनी शुरू की। बच्चा होता नहीं कि सिपाही उसकी खबर राजा कंस तक पहुंचा देते और कंस नवजात बच्चों को धरती पर पटककर मार देता।

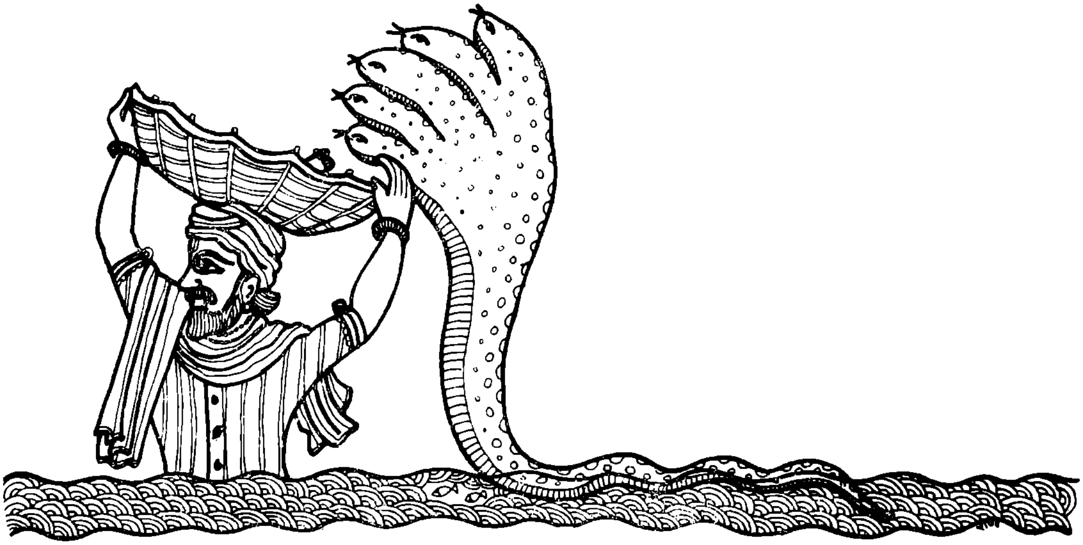
इस प्रकार सात बच्चों की हत्या कंस ने की। आठवें बच्चे के रूप में जनमे कृष्ण कन्हैया!

वह रात भयंकर आंधी, तूफान, वर्षा की काली अंधेरी रात थी।

वसुदेव ने अपने बेटे को साहस करके बचा लिया। गोकुल जाकर यशोदा के पास रख आये अपना लड़का, और उठा लाये उसकी लड़की!

उस लड़की को जैसे ही घुमाकर कंस पत्थर पर पटकने चला वैसे ही उसे लगा, मानो वह बच्ची कह रही है, "मूरख, मेरी जान क्या लेता है? तेरी जान लेनेवाला तो पैदा हो गया है।"

मौत से डरनेवाले आदमी को हर जगह मौत ही खड़ी दिखायी देती है।



"हैं, तो क्या मैंने व्यर्थ ही इतने सारे बच्चों की जानें लीं ?" सोचता, पछताता कंस अपने महल की तरफ लौट पड़ा ।

गोकुल में चारों तरफ शहनाइयां बज रही हैं । सभी लोग मगन हैं कि यशोदा के भये नंदलाल ! सगे-सम्बन्धी, नाते-रिश्तेदार, गांववाले सब-के-सब खुशी से झूम रहे हैं । धूम मची है नन्द की हवेली में । गोपियां झूम-झूमकर गा रही हैं ।

बच्चे का नाम रखा जाता है — कृष्ण कन्हैया !

रोहिणी का बेटा बलराम, कृष्ण से बड़ा है । बड़ी मनोहर जोड़ी है बलदाऊ और कृष्ण की ।

कंस को शक हो गया कि हो न हो, मेरा काल कहीं गोकुल में न हो । वसुदेव के भाई नन्द वहीं रहते हैं । वसुदेव से उनकी पटती भी है खूब । कहीं वसुदेव ने कोई चाल तो नहीं चली ? उसने गोकुल में अपना हुक्म भेज दिया, "सारे गोप खुद आकर मेरा कर चुका जायें ।"

सीधे-सादे गोप दही, मक्खन, घी भर-भरकर चल दिए महाराज को

भेंट पहुंचाने। इधर सब लोग मथुरा के लिए चले और उधर एक खूब गोरी–चिट्टी सुन्दरी पहुंची गोकुल में। कीमती गहनों से लदी, फूलों से सजी-धजी। उसके हाथ में था सुन्दर-सा कमल का फूल।

जो उसे देखता, हैरान रह जाता।

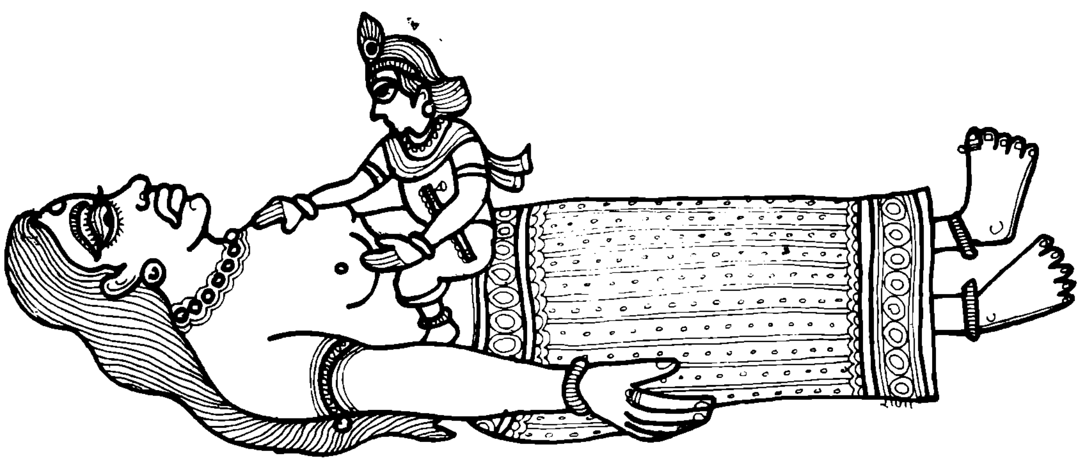
गोपियां समझीं कि कोई देवी पधारी हैं हमारे यहां। सब लगीं उसे हाथ जोड़कर प्रणाम करने। वह सुन्दरी नन्द की हवेली में जा पहुंची, जहां कृष्ण पालने में लेटे हुए थे।

यशोदा को फटकारती-सी वह बोली, "क्यों नन्दरानी, तुझे बच्चा पालना भी नहीं आता? भला ऐसे कहीं बच्चा पाला जाता है? देख तो बेचारे का पेट कितना भीतर चला गया है! पता नहीं कब से भूखा पड़ा है बेचारा!"

उसने झट से कृष्ण को अपनी गोदी में उठा लिया और लगी प्यार से उसे दूध पिलाने। कृष्ण को लगा कि यह मेरी मां तो नहीं जान पड़ती। कोई अजनबी औरत है। वे लगे अपने नाखूनों से उसके स्तन नोचने-खरोचने।

सुन्दरी को तकलीफ होने लगी। कृष्ण को गोदी में लेकर वह बाहर की तरफ भागी, और भागती ही चली गयी।

जब वह कुछ दूर निकल गयी तब यशोदा और दूसरी गोपियों को होश



आया। सब बुरी तरह घबरा उठीं। लगीं चिल्लाने, "देखो-देखो, वह औरत हमारे लाल को लेकर भागी जा रही है।"

यशोदा तो कृष्ण के वियोग में बेचैन होकर बेहोश हो गयीं, "हाय मेरा लाल!"

कोई गोपी चिल्लायी, "हाय, कहीं वह पूतना राक्षसी तो नहीं, जो इन दिनों बच्चों को दूध पिलाने के बहाने मारती फिर रही है?"

कोई बोली, "लगता है, वही है यह राक्षसी!"

शोर मचा।

गोपियां दौड़ पड़ीं उसी दिशा में जिधर वह औरत गयी थी।

दूर एक बगीचे में जाकर देखा कि वह औरत जहर से नीली पड़ी है। उसके प्राण निकल गये हैं और कृष्ण उसकी छाती पर चढ़े खेल रहे हैं उसके स्तनों से।

गोपियां कृष्ण को जल्दी से उठा लायीं।

यशोदा को देते हुए कहा, "लो, तुम्हारा लाल सही-सलामत है। दरअसल वह पूतना ही थी जो कृष्ण को जहर पिलाने आयी थी। उसका सारा शरीर नीला पड़ गया है। उसका जहर उसी को खा गया। जान पड़ता है कृष्ण ने उसके स्तनों को नाखूनों से नोचा-खसोटा, तो उसका जहर उसी के शरीर में फैल गया।"

यशोदा ने कृष्ण को गोद में भर लिया, "मेरे लाल, अभी से राक्षसों का मुकाबला करने लगा तू!"

नन्द और दूसरे गोप शाम को जब लौटे तो बगीचे में जहर से नीली पड़ी पूतना को देख कर हैरान रह गये। कंस की यह मुंहबोली बहन कहीं हमारे लाल को मारने तो नहीं आयी थी? दौड़े-दौड़े नन्द घर पहुंचे।

घर पर उन्हें पूतना की करतूत का पता चला।

पूतना आयी थी दूध पिलाकर कृष्ण को मारने, कृष्ण उसे ही पी गये।

कृष्ण, बलराम बड़े हुए तो गायों, बछियों, बछड़ों को लेकर रोज जंगलों में जाते। जब गायें घास खाकर आराम से बैठकर जुगाली करने लगतीं तब ग्वाल-बाल निश्चित होकर खेल खेलते।

कृष्ण तो बचपन से ही थे बड़े नटखट, शरारती !

एक दिन ये लोग गेंद खेल रहे थे। कृष्ण की बारी आयी तो उन्होंने गेंद तो उठा ली, पर शरारत सूझी तो बोले, "मैं नहीं खेलता।"

श्रीदामा बिगड़ा, "खेलेगा नहीं तो गेंद दे दे।"

कृष्ण ने फिर शैतानी की, "नहीं देता।"

"कैसे नहीं देगा", एक लड़का कृष्ण से गेंद छीनने बढ़ा।

कृष्ण ने पीताम्बर बांधा और गेंद लिये चढ़ गये कदम्ब के पेड़ पर।

वहीं से कृष्ण ने गेंद यमुना में फेंक दी, "लो, अब देखो मेरा खेल !"

गेंद बहती-बहती जा पहुंची कालिया नाग के पास।

कालिया नाग हजार फनोंवाला महाभयंकर नाग था। बड़ा जहरीला। उसके मुंह से जो फेन निकलता था उससे सारा पानी जहरीला हो गया था। जो उसे पीता, उसी पर जहर चढ़ जाता।

पशु, पक्षी, आदमी सभी उस पानी से दूर रहते थे।

कृष्ण के साथी ग्वाल-बाल जहरीले पानी में गेंद गिरती देखकर बुरी तरह घबरा उठे। क्या होगा अब ?

कृष्ण मुस्कराते हुए बोले, "क्यों घबराते हो तुम लोग? मैं अभी लाता हूं गेंद निकाल कर।"

सभी लड़के चिल्लाने लगे, "कन्हैया, खबरदार जो तू नदी में कूदा। हमें नहीं चाहिए गेंद। हमने भर पायी।"

पर कन्हैया तो तुल गया था शरारत पर। कदम्ब की एक शाख पर से वह नदी में कूद ही तो पड़ा।

सब ग्वाल-बाल हाय, हाय कर उठे।

कृष्ण लगे नदी में मस्ती से तैरने। उस समय कालिया नाग सो रहा था। कृष्ण को तैरते-तैरते उसकी पूंछ दीख पड़ी। उन्होंने कसकर उस पर लात जमा दी।

चोट खाया सांप कितना भयंकर हो उठता है, यह कौन नहीं जानता। वह जोर से फुफकारता हुआ दौड़ा कृष्ण की तरफ। वह चाहता था कि कृष्ण को अपने शरीर से लपेट कर डंस ले।

पर चालाक कृष्ण उसके फन्दे में फंसे ही नहीं।

कालिया पूरी कोशिश में था कि किसी तरह कृष्ण पर वार करे। कृष्ण थे कि उसका हर दाव बचाते चल रहे थे। इसी दाव-पेंच में कृष्ण को मौका मिल गया, और वे कालिया नाग के फन पर सवार हो गये।

फन पर चढ़कर कृष्ण नाचने लगे।

कालिया के फन पर नाच-नाचकर कृष्ण ने उसे इतना थका दिया कि वह मरने-मरने को हो गया।

जान बचाकर वह नदी से निकल भागा।

कृष्ण ने उसे खदेड़ते हुए कहा, "खबरदार जो फिर कभी इधर आने की हिम्मत की। इस दफा तो मैं तुझे छोड़ दे रहा हूं, फिर कभी आया तो तेरी खैर नहीं।"

कालिया भागा तो उसके साथ-साथ सांपों की लम्बी पलटन भी भाग चली।

गायों और ग्वालों का एक बहुत बड़ा संकट खेल-खेल में कृष्ण ने समाप्त कर दिया।



एक दिन गोकुल की गायें बड़े संकट में फंस गयीं।

वे पड़ गयीं दावानल की चपेट में।

दावानल वह आग होती है जो कभी-कभी जंगल में लग जाती है। कभी-कभी ऐसा होता है कि हवा से बांस आपस में टकराते हैं। उनके टकराने से चिनगारी फूटती है। यही चिनगारी हवा पाकर भयंकर आग का रूप धारण कर लेती है। उसके भीतर फंसे

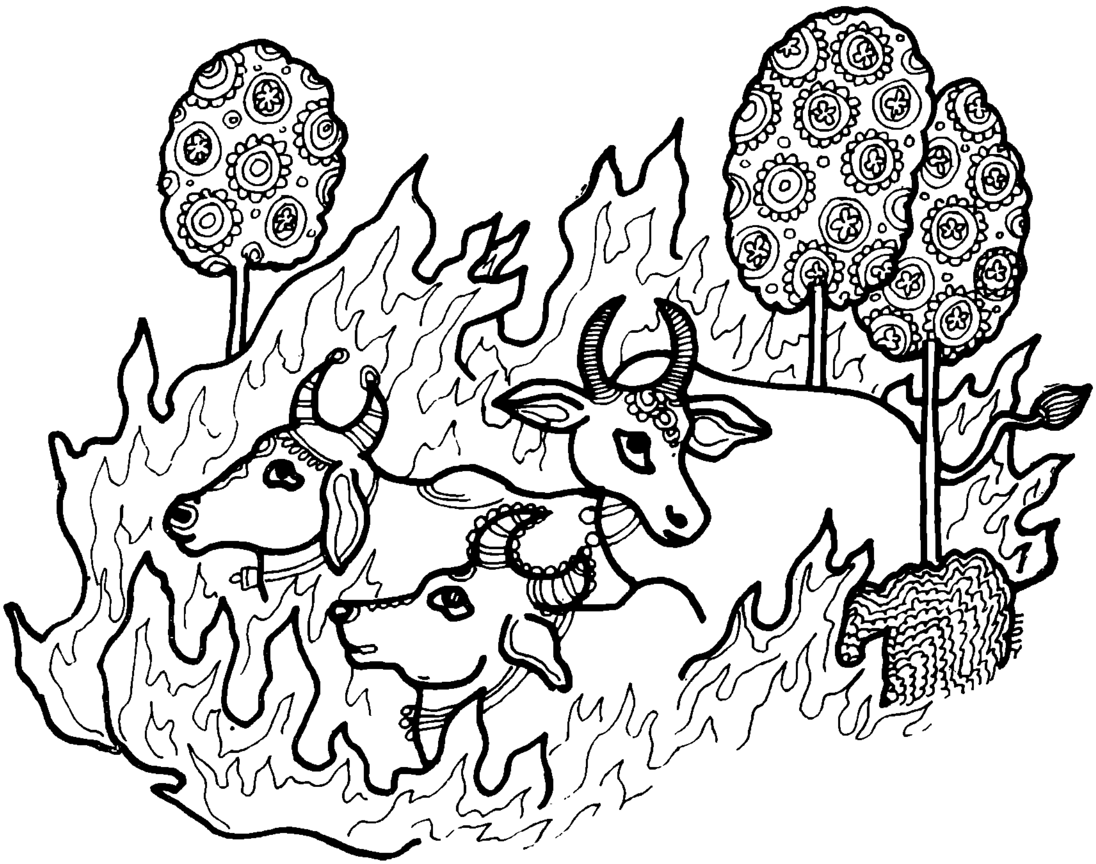
आदमी, जानवर सब जलकर स्वाहा हो जाते हैं। पेड़-पौधों का तो नाम भी नहीं बचता।

उस रोज, इसी दावानल में फंसी गायें और ग्वाल-बाल सब बुरी तरह घबरा उठे। ग्वालों की तो सारी संपत्ति गायें ही हैं। उन्हीं के दूध-दही-मक्खन-घी से वे जीते हैं।

गायें संकट में पड़ीं कि ग्वालों की जान निकली।

सब लोग हाय, हाय पुकारने लगे। लेकिन कौन बचाये इस महाभयंकर दावानल से?

"कहां है हमारा कृष्ण कन्हैया? कहां है हमारा गोविन्द? कहां है



हमारा गोपाल?" सब चिल्लाने लगे, "वही हमें बचा सकता है इस संकट से!"

कृष्ण ने जैसे ही गोकुल के ग्वालों की यह पुकार सुनी, दौड़कर पहुंचे आग के पास।

चतुरता तो उनमें थी ही, साहसी भी कम नहीं थे। अपनी सूझबूझ से उन्होंने गायों को आग से बाहर निकाला, और सभी ग्वाल-बालों के साथ मिलकर आग पर काबू किया। बगल में नदी बहती थी तो पानी भी खूब मिला उन्हें।

एक बार ही नहीं, दो बार ऐसा काण्ड हुआ। दूसरी दफा भी कृष्ण ने बड़ी कुशलता से आग बुझायी। ऊंची-ऊंची लपटों से डर के मारे ग्वाले तो दूर खड़े थे। उनकी आखें मुंद गयी थीं। वे देख ही नहीं पाये कि कृष्ण ने आग बुझाने में कौन-सी तरकीब लगायी।

वे कहने लगे, "हमारा गोपाल बड़ा योगी है। योगी लोग आग पी जाते हैं। कृष्ण भी आग पी गया।"

उन लोगों ने सारे गोकुल में कृष्ण के आग पी जाने की बात फैला दी।

कृष्ण के पराक्रम की बातें फैलती-फैलती जा पहुंचीं कंस तक!

कंस को शक हुआ कि गोकुल में, नन्द गोप के घर जो कृष्ण है, वही शायद देवकी का आठवां बेटा है।

वह कृष्ण को मार डालने के लिए परेशान हो उठा।

पूतना भी गयी थी कृष्ण को दूध के साथ जहर पिलाकर मारने। पर बेचारी अपने जहर से आप ही मर गयी।

और भी कुछ लोगों को कंस ने भेजा था कृष्ण को मारने, पर वे सब भी कृष्ण के हाथों मारे गये।

कंस ने सोचा कि क्यों नहीं कृष्ण को ही किसी बहाने से मथुरा बुलाया जाये और यहीं उसे मार दिया जाये।

कंस ने अक्रूर को भेजा गोकुल।

नन्द गोप को उसने यह संदेशा दिया कि शिवरात्रि पर कंस महाराज धनुष की पूजा करेंगे और पहलवानों का दंगल भी होगा। उसे देखने के लिए नन्द कृष्ण और बलराम के साथ मथुरा पधारें। दूसरे गोपों को भी अपने साथ लायें।

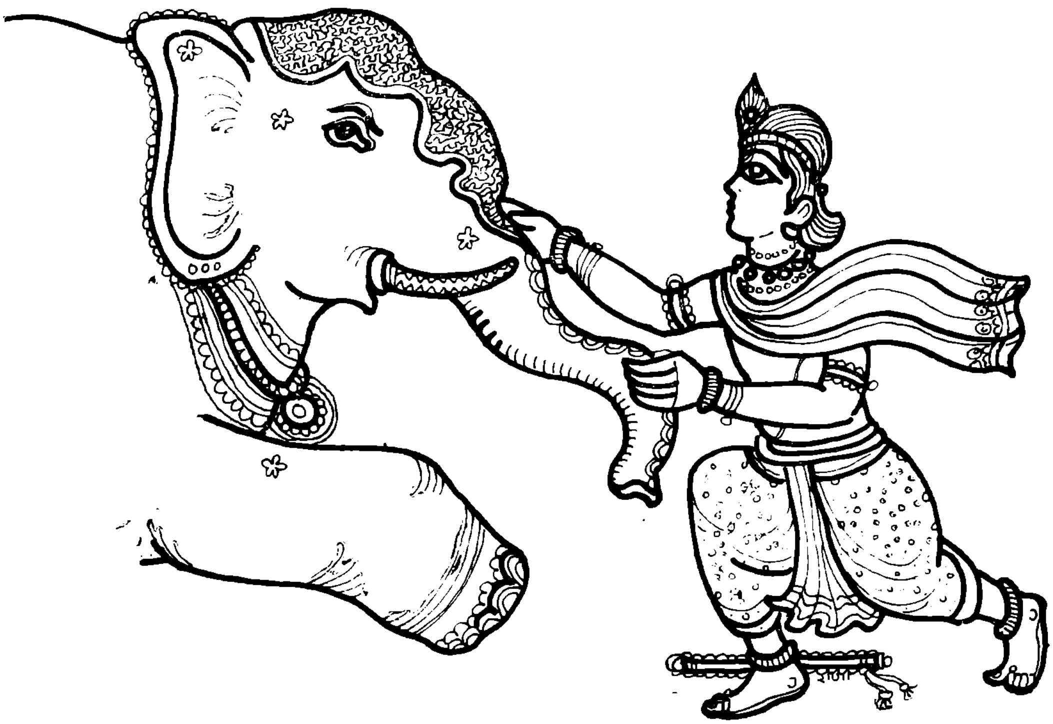
भोले नन्द आ गये कंस की चाल में। कृष्ण-बलराम को लेकर वे मथुरा रवाना हो गये।

मथुरा नगर गोकुल से बहुत बड़ा था। इस उत्सव के लिए खूब सजाया भी गया था। बच्चों को बड़ा मजा आया। वे चल दिये नगर की सजावट देखने।

घूमते-घूमते ये लोग वहां पहुंचे, जहां पर वह भारी धनुष रखा था जिसकी दूसरे दिन पूजा होनेवाली थी। कृष्ण तो शरारती थे। सोचा, जरा इसे उठा कर तो देखें। लोग कहते हैं कि यह इतना भारी है कि अकेले आदमी से उठ नहीं सकता।

देखते-देखते कृष्ण ने धनुष उठा लिया, और लगे उसकी डोर खींचने। धनुष के रखवाले अभी बेखबर थे। पर जब कृष्ण ने धनुष उठा लिया और उसकी डोर खींचने लगे तो वे सब दौड़े। जब तक वे कृष्ण को रोकते तब तक तो कृष्ण के खींचने से धनुष जोर की आवाज के साथ टूटकर दो टुकड़े हो गया।

लोग सुनकर चौंक पड़े, "देखो, देखो, किसी ने धनुष तोड़ दिया! पकड़ो, पकड़ो!!"



लोग इधर चिल्ला रहे थे, और उधर कृष्ण-बलराम वहां से निकलकर बाहर आ गये।

कंस की सभा में घुसने का दरवाजा बड़ा पतला था।

कृष्ण जब आने को हुए तो कंस ने एक विशालकाय हाथी को शराब पिलाकर वहां खड़ा कर दिया।

कृष्ण ने हाथी हटाने को कहा तो महावत ने हाथी को कृष्ण पर चढ़ा दिया।

कृष्ण ने पैंतरा बदल कर हाथी की सूंड़ पकड़ ली और कसकर एक घूंसा लगा दिया। तिलमिला उठा हाथी और कृष्ण पर झपटा। कृष्ण उसके पेट के नीचे से इधर-उधर कूदने लगे।

कृष्ण जमीन पर बैठ गये। हाथी ने अपने दांतों से जैसे ही जोरदार प्रहार उनपर करना चाहा, वे उठकर भाग निकले। हाथी के दांत जोर से जमीन पर टकराये और वह दर्द से चिल्लाने लगा।

अब कृष्ण ने हाथी की पूंछ पकड़ ली। पूंछ हाथी की सबसे नाजुक जगह होती है। कृष्ण ने हाथी की पूंछ ऐसी खींची कि वह खिंचती ही चली गयी। और फिर एक जोर की जो पटकी दी तो हाथी टें बोल गया।

कंस के अखाड़े में बड़े-बड़े, भारी-भरकम पहलवान कुश्ती के लिए तैयार खड़े थे। कृष्ण-बलराम के भीतर आते ही उन्होंने कुश्ती के लिए ललकारा।

कहां वे हट्टे-कट्टे, लम्बे-तगड़े, बड़ी उमर के पहलवान और कहां बच्चे कृष्ण-बलराम!

कुश्ती में बराबरी का जोड़ होना चाहिए, लेकिन कंस के दरबार में न्याय कहां?

कृष्ण-बलराम ललकार सुनते ही लड़ने उतर पड़े।

कंस के पहलवानों ने इन दोनों को पछाड़ने की पूरी कोशिश की, अच्छे-से-अच्छे दाव चलाये, पर उनकी सारी चालें बेकार गयीं।

कृष्ण ने चाणूर और बलराम ने मुष्टिक पहलवान को पटककर ऐसा रगड़ा कि उनके प्राण छूट गये।

दूसरे पहलवान यह तमाशा देख पीछे के दरवाजे से नौ-दो-ग्यारह हो गए।

पहलवानों को कृष्ण बलराम ने जैसे ही पछाड़ा, वैसे ही सारी सभा तालियां बजाने लगी ।

यह देख कंस के क्रोध का पार नहीं रहा । वह लगा चिल्लाने, "पकड़ो, कृष्ण-बलराम को! गिरफ्तार कर लो नन्द को! मार डालो वसुदेव को! . . ."

कंस यों चिल्ला रहा था, तबतक कृष्ण सीढ़ियां चढ़कर सिंहासन तक जा पहुंचे ।

उन्हें देखकर कंस ने अपनी तलवार खींच ली और कृष्ण पर हमला बोल दिया ।

भीतर से वह कांप भी रहा था, "हाय, मेरा काल आ गया!"



कृष्ण ने एक हाथ से कंस का मुकुट उतारकर नीचे फेंका और दूसरे हाथ से उसके बाल पकड़कर उसे मंच के नीचे धकेल दिया ।

कंस अभी उठ भी नहीं पाया था कि कृष्ण ऊपर से कूदकर उसकी छाती पर सवार हो गये और लगे उसकी नाक पर, मुंह पर जोर-जोर से मुक्का मारने ।

कंस के मुंह से खून बहने लगा और उसका खात्मा हो गया ।

कंस के आठ भाई दौड़े कृष्ण-बलराम पर हमला करने ।

दोनों भाइयों ने उन आठों को भी मौत के घाट उतार दिया ।

कृष्ण ने जेल में जाकर अपने माता-पिता वसुदेव-देवकी को छुड़ाया ।

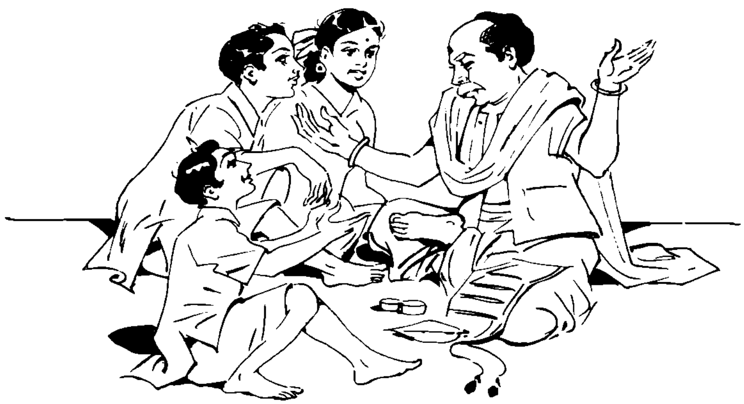
पुत्र की वीरता और साहस से माता-पिता निहाल हो उठे ।

कृष्ण ने अपने बाबा उग्रसेन को भी जेल से छुड़ाकर मथुरा की गद्दी पर बैठाया ।

कृष्ण की कीर्ति चारों ओर फैल गयी ।

हिन्दुस्तानी प्रचार सभा की स्थापना १९३८ में महात्मा गांधी की प्रेरणा तथा पेरीन बहन केप्टन के सद्प्रयत्नों से हुई थी। इस संस्था की कोशिश ऐसी राष्ट्रभाषा विकसित करने की रही है, जिसे आम जनता आसानी से समझ सके और जो नागरी व उर्दू दोनों लिपियों में लिखी जा सके। वह भाषा है हिन्दुस्तानी !

हिन्दुस्तानी प्रचार सभा दुनिया के सभी धर्मों से चुनी हुई, ज्ञान और आनन्द से भरी कहानियों की एक सौ किताबों का जो सेट बच्चों के लिए तैयार कर रही है, यह उसकी **चौथी** किश्त है। इस सेट के हर किताब की कीमत दो रुपये होगी।



# हमारे आगामी प्रकाशन

- राजा महाजनक
- संत जलाराम
- कंजूस इल्लीस
- कूरगडु मुनि
- कण देवता
- बक राक्षस का वध
- हनुमान
- स्वामी विवेकानंद
- सुनहरा नेवला
- भाई हो तो भरत जैसा

# बच्चों की कहानियां

## हिन्दुस्तानी प्रचार सभा
बंबई-४००००२

